श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्व ॥ ५० ॥ जिसप्रकार सांकलमें बंधा हुआ मनुष्य वहीं रुका रहता है उसीप्रकार जो इस जीवको मनुष्य, तिर्यंच आदिके शरीरमें रोक रक्खे उसे आयुकर्म कहते हैं। यह जीव आयुकर्मके उदयसे मनुष्यादि भव धारण करता है। यह आयुकर्म चार प्रकारका है। मनुष्यायु, तिर्यगायु, देवायु, नरकायु ॥ ५१ ॥ जिसप्रकार चित्रकार अनेक प्रकारके चित्र बनाता है उसी प्रकार जो अनेक प्रकारके शरीरकी रचना करता है उसे नामकर्म कहते हैं। उसके तिरानवे भेद हैं। देव, मनुष्य, तिर्यंच, नरक ये चार गतियां, एकेंद्रिय, दोइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौइंद्रिय, पंचेंद्रिय ये पांच जाति, औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्मण पांच शरीर, औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, आंगोपांग, निर्माण औदारिक, वैक्रियक, आहारक तैजस, कार्मण पांच बन्धन, ये ही [illegible] आदि पांच संघात, समचतुरस्र, न्यग्रोधपरिमण्डल, स्वाति, कुब्जक, वामन, हुंडक ये छह संस्थान, वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच- कीलक असंप्राप्तासृपाटिका ये छह संहनन, स्पर्श आठ, रस पांच, गन्ध दो, [illegible] नरक, तिर्यग, मनुष्य, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, विहायोगति दो, प्रत्येक, साधारण, त्रस, स्थावर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर,

---

विंशतिः [illegible] मद्यघत्तूरवन्नरम् ॥५०॥ आत्मानं भवमेत्यायुर्यत्तच्चतुर्विधं [illegible] भवधारणसामर्थ्यं शृंखलास्थ नरोपमम् ॥५१॥ नानाविधं [illegible] करोति नाम तन्मतम्। चित्रकारो यथा चित्रं

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

दूसरा सुषमा काल तीन कोड़ाकोड़ी सागरका है, तीसरा सुषमादुःषमा काल दो कोड़ाकोड़ी सागरका है, चौथा दुःषमा-सुषमा काल व्यालीस हजार वर्ष कम एक कोड़ाकोड़ी सागरका है, पांचवां दुःषमा काल इकईस हजार वर्षका है और छठा दुःषमादुःषमा भी इकईस हजार वर्षका है ऐसा आगमको जाननेवाले आचार्योंने कहा है ॥८६–८८॥ इनमें पहलेके तीन कालोंमें भोगोपभोगकी सामग्री कल्पवृक्षोंसे प्राप्त होती है इसीलिये चतुर पुरुष इन तीनों कालोंको भोगभूमि कहते हैं ॥ ८९ ॥ इनमेंसे पहले कालके जीवोंकी उत्कृष्ट आयु तीन पल्यकी होती है, दूसरे कालके जीवोंकी आयु दो पल्यकी और तीसरे कालके जीवोंकी आयु एक पल्यकी होती है। यह आयु देवकुरु आदि उत्तम, मध्यम, जघन्य भोगभूमिके समान ही समझनी चाहिये ॥९०॥ वहांके मनुष्य जुगलिया होते हैं। पहले कालके प्रारम्भमें वहांके मनुष्य छह हजार धनुष, दूसरे कालके प्रारम्भमें चार हजार धनुष और तीसरे कालके प्रारम्भमें दो हजार धनुष, ऊँचे होते हैं ॥९१॥

कोटीकोट्यः समुद्राणां चतस्रः प्रथमे मताः ॥ ८६ ॥ द्वितीये ताः प्रमास्तिस्रो द्वे च प्रोक्ते तृतीयके। एका तुर्ये द्विचत्वारिंशत्सहस्राब्दवर्जिता ॥ ८७ ॥ प्रमा पंचमकालस्यैकविंशतिसहस्रिका। ता एव षष्ठमस्यापि प्रोक्ता चागमसूरिभिः ॥ ८८ ॥ आद्येषु त्रिषु कालेषु ददंति कल्पपादपाः। भोगं तेन मता चेयं भोगभूमिर्विचक्षणैः ॥८९॥ आयुराद्यत्रये काले त्रीणि द्वे एकं मतम्। क्रमात् पल्यानि वै देवकुर्वादिभोगभूमिवत् ॥ ९० ॥ युग्मधर्मयुता भूत्वा तेषामादौ च

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥ जो मुनिराज कामदेवरूपी मदोन्मत्त हाथीको जीतनेवाले हैं, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि अन्तरङ्ग शत्रुओंका नाश करनेवाले हैं और जो संसाररूपी महासागरके डरसे सदा भयभीत रहते हैं ऐसे मुनिराजके चरण-कमलोंको मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥ जो सज्जन दुष्ट पुरुषोंके वचन रूपी सर्पोंसे कभी विकारको प्राप्त नहीं होते हैं और जो सदा दूसरोंके हितकी ही इच्छा करते रहते हैं ऐसे सज्जनोंको भी मैं नमस्कार करता हूं ॥९॥ जो दूसरोंके कार्योंमें सदा विघ्न करनेवाले हैं, जिनका हृदय सदा कुटिल रहता है और जो सर्पके समान सदा निंदनीय हैं ऐसे दुष्ट पुरुषोंको मैं उनके डरसे नमस्कार करता हूं ॥१०॥ पहिलेके महा ऋषियोंके मुंहसे सुनकर और शेष सज्जनोंसे पूछकर मै श्रीगौतम-स्वामीका अत्यंत सुख उत्पन्न करनेवाला चरित्र कहता हूं ॥ ११ ॥ न्याय, सिद्धांत, काव्य, छंद, अलंकार, उपमा, व्याकरण, पुराण आदि शास्त्रोंको मैं सर्वथा नहीं जानता, तथा

सद्धर्मामृतसंदोहप्रीणितसज्जना मम । प्रसन्ना यतयः संतु परोपकृति-तत्पराः ॥७॥ कामकरींद्रजेतॄंश्च मोहक्रोधादिनाशकान् । यतिनाथान् सदा वंदे भवाब्धिभयभीतिकान् ॥ ८ ॥ विकृतिं यांति नो ये हि दुर्जनवचनाहिभिः । सज्जनांस्तान्नहं नौमि परेषां हितकांक्षिणः । दुर्ज-नान् भयतो वंदे परप्रत्यूहकारिणः । कुटिलहृदयान् संपीलोकविनिं-दितान्निव ॥ १० ॥ पूर्वर्षिवदनाच्छ्रुत्वा शेषानाप्टच्छ्य सज्जनान् । गौतमस्वामिनो वक्ष्ये चरितं सुसुखाकरम् ॥११॥ न्यायसिद्धांतसत्का-व्यछंदोऽलंकाररूपकम् । व्याकरणपुराणादिशास्त्रौघं च न वेद्म्यहम्

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०

श्रीवीतरागाय नमः ।

४५६ S. A. २

मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रविरचित—

श्रीगौतमचरित्र ।

(मूल संस्कृत व भाषाटीका सहित)

हिंदी टीकाकार—

श्री० धर्मरत्न पं० लालारामजी शास्त्री, चावली (आगरा) नि०

आदिपुराण, उत्तरपुराण, सागारधर्मामृत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार,
शांतिनाथपुराण, धर्मप्रश्नोत्तर, चारित्रसार आदि
अनेक ग्रन्थोंके हिन्दी टीकाकार)

संघी गोतीलाल का
मैनपाट

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दिगंबर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी—सूरत ।

"जैनविजय" प्रि० प्रेस—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया ।

प्रथमावृत्ति] वीर स० २४५३ [प्रति १०००

मूल्य १-४-०